Toppersnotes
Unleash the topper in you

UGC-NET

हिन्दी साहित्य

NATIONAL TESTING AGENCY (NTA)

पेपर - 2 || भाग - 2

हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास, भारतीय काव्यशास्त्र एवं वैचारिक पृष्ठभूमि

SIERRA INNOVATIONS

UGC NET

हिन्दी साहित्य

क्र.सं.	विषय–सूची	पृष्ठ संख्या
	इकाई – 2 **हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास**	
1.	हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास	1
2.	हिन्दी उपन्यास • प्रेमचंद पूर्व युगीन उपन्यास	15
3.	प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास (1918 ई.से 1938 ई. तक)	19
4.	हिन्दी कहानी	33
5.	हिन्दी नाटक	56
6.	हिन्दी निबंध	75
7.	हिन्दी आलोचना	92
8.	हिन्दी की अन्य गद्य विधाएँ	119
9.	यात्रा साहित्य	123
10.	आत्मकथा	125
11.	जीवनी	126
12.	संस्मरण एवं रेखाचित्र	129
13.	'रिपोर्ताज'	133
14.	प्रमुख यात्रा साहित्यकार तथा उनके यात्रा वृत्तान्त	134
15.	अभ्यास प्रश्न	136
	इकाई – 3 **साहित्यशास्त्र**	
1.	काव्य के लक्षण	141
2.	काव्य हेतु	142
3.	काव्य प्रयोजन	143
4.	रस सम्प्रदाय	144
5.	अलंकार संप्रदाय	155
6.	रीति संप्रदाय	161
7.	ध्वनि संप्रदाय	163
8.	वक्रोक्ति सप्रंदाय	164
9.	औचित्य संप्रदाय	165
10.	काव्य दोष	166
11.	शब्द शक्ति	168

12.	प्लेटो के काव्य सिद्धांत –	173
13.	अरस्तु के सिद्धांत	174
14.	अनुकरण सिद्धांत	175
15.	त्रासदी विवेचन	175
16.	विरेचन सिद्धांत	176
17.	वर्ड्सवर्थ का काव्य भाषा सिद्धान्त	177
18.	कॉलरिज : कल्पना और फैटेसी	178
19.	टी. एस. इलियट के सिद्धान्त	179
20.	आई.ए. रिचर्ड्स के सिद्धान्त	179
21.	संप्रेषण सिद्धान्त	180
22.	रुपवाद	181
23.	संरचनावाद	181
24.	मिथक	182
25.	प्रतीक	182
26.	बिंब	183
27.	यथार्थवाद	184
28.	अभ्यास प्रश्न	185
	इकाई – 4 **वैचारिक पृष्ठभूमि**	
1.	भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन नवजागरण की अवधारण	189
2.	हिन्दी नवजागरण	190
3.	अदालती भाषा को लेकर संघर्ष	190
4.	फोर्ट विलियम कॉलेज	191
5.	भारतेंदु व हिन्दी नवजागरण	191
6.	महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण	192
7.	गांधीवादी दर्शन	192
8.	अम्बेडकर दर्शन	193
9.	लोहिया दर्शन	194
10.	मार्क्सवाद, मनोविश्रलेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद, अस्मितामूलक विमर्श (दलित, स्त्री, आदिवासी एवं अल्पसंख्यक)	195

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

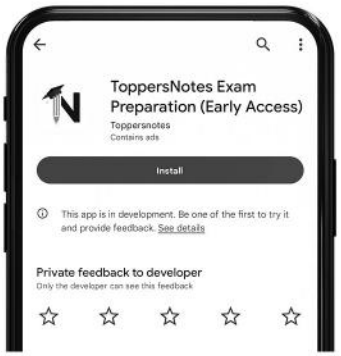

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

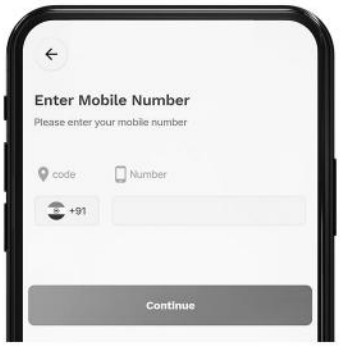

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

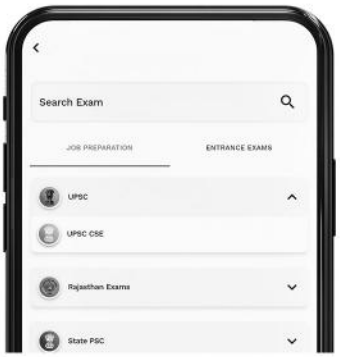

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

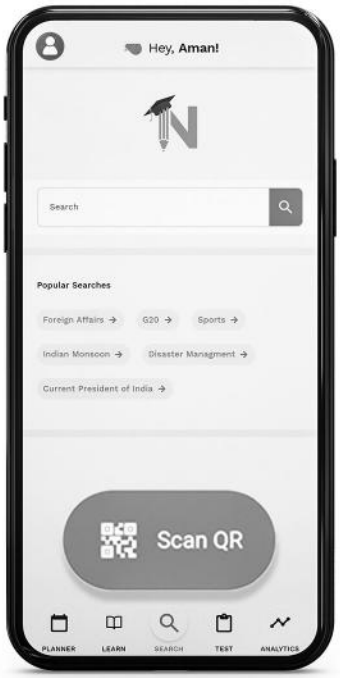

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास

साहित्य का विभाजन– सम्पूर्ण साहित्य जगत् में प्राप्त होने वाली रचनाओं को निम्नानुसार विभाजित किया गया है –

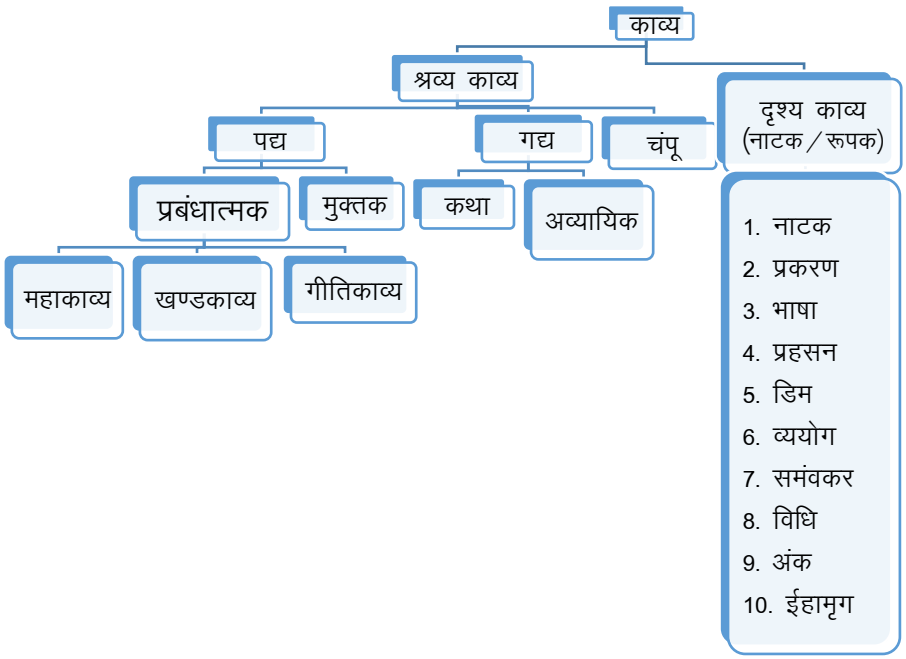

'गद्य' शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ

- गद्य शब्द– 'गद्' धातु में 'य (भत)' प्रत्यय के जुड़ने से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है, 'मौलिक अभिव्यक्ति' अर्थात् किसी भी व्यक्ति के द्वारा अपने में उत्पन्न होने वाले विचारों को मूल रूप में लिख देना ही गद्य काव्य कहलाता है।
- गद्य की परिभाषा– आचार्य दण्डी की स्वरचित काव्यदर्श रचना में गद्य की परिभाषा के लिए निम्नलिखित दो कथन हैं –
  - ''आपाद पदसन्तानो गद्यः'' अर्थात् छन्द के नियमों से रहित पद रचना गद्य कहलाती है।
  - ''ओजः समासभूमस्तमेतद् गद्यस्य लक्षणम्'' अर्थात् जिस रचना में ओज गुण की प्रधानता होती है तथा सामासिक पदों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है, वह गद्य रचना कहलाती है।

नोट–

- संसार के सभी साहित्यों में सर्वप्रथम पद्य काव्य ही लिखा गया है एवं उसके सफल होने के बाद ही गद्य काव्य लिखा जाता है।
- ''गद्य कविनां निकंश वदन्ति'' अर्थात् 8वीं शताब्दी में कहे गए आचार्य वामन के इस कथन के अनुसार गद्य काव्य को कवियों की कसौटी कहा गया है।

गद्य काव्य के भेद

- संस्कृत आचार्यों के अनुसार गद्य काव्य के प्रमुखतः दो भेद माने गए हैं यथा–
  - कथा– कवि की कल्पना के आधार पर रचित गद्य काव्य रचना।
  - आख्यायिक– ऐतिहासिक कथानकों के अधार पर रचित गद्य काव्य रचना।
- सामासिक पदों के प्रयोग के आधार पर गद्य काव्य के चार भेद माने गए हैं–
  - मुक्तक गद्य– सामासिक पदों से रहित गद्य काव्य रचना।

- चूर्णक गद्य– सामासिक पदों का अल्प मात्रा में प्रयोग।
- उत्कालिका प्रायः गद्य– सामासिक पदों का अधिक मात्रा में प्रयोग।
- वृत्तगंधि गद्य– गद्य को भी पद्य की तरह लिखने का प्रयास।

- हिन्दी साहित्य में गद्य काव्य के भेदों को विद्या के नाम से जाना जाता है तथा हिन्दी गद्य साहित्य में अब तक निम्नलिखित 17 विधाएँ विकसित हुई हैं–
  - निबन्ध
  - आलोचना समालोचना
  - उपन्यास
  - कहानी
  - नाटक
  - एकांकी
  - आत्मकथा
  - जीवनी
  - रेखाचित्र
  - संस्मरण
  - मात्रावृत्त
  - रिपोर्ताज
  - पत्र
  - डायरी
  - फीचर
  - साक्षात्कार
  - संदर्भ ग्रन्थ/स्मृति ग्रन्थ

नोट– प्रेस (छापेखाने) के अविष्कार के बाद हिन्दी गद्य साहित्य में सर्वप्रथम 'निबन्ध' विधा विकसित हुई मानी जाती है।

हिन्दी गद्य साहित्य का काल विभाजन

- शुक्ल जी के द्वारा सम्पूर्ण गद्य साहित्य को निम्नानुसार चार खण्डों में विभाजित किया गया है–
  - अभ्युत्थान काल (भारतेन्दु युग)– (1900 वि. से 1950 वि.) (1843 ई. से 1893 ई.)
  - परिष्कार काल (द्विवेदी युग)– (1950 वि. से 1975 वि.) (1893 ई. से 1918 ई.)
  - उत्कर्ष काल (छायावादी युग)– (1975 वि. से 1995 वि.) (1918 ई. से 1938 ई.)
  - वर्तमान काल (अद्यतन काल)– (1995 वि. से अब तक) (1938 ई. से अब तक)

हिन्दी गध की परम्परा आदिकाल से मिलने लगती हैं । आधुनिक काल से पहले गध के तीन रूप प्राप्त होते हैं – राजस्थनी गध, ब्रजभाषा और खड़ी बोली गध।

राजस्थानी गध की प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार

क्र.स.	रचना	समय	रचनाकार
1.	धनपाल	14 वीं सदी	–
2.	तत्वविचार	14 वीं सदी	–
3.	पृथ्वीचन्द्र चरित्र (वाग्विलास)	1421 ई.	माणिक्य चंद्र सूरी
4.	पंचाख्यान	1847 ई.	फतहराम बैरागी

ब्रजभाषा गध की प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार –

क्र.स.	रचना	समय	रचनाकार
1.	श्रृंगार रस मंडन	–	विट्ठलनाथ
2.	चौरासी वैष्णवों की वार्ता	17 वीं सदी का उत्तार्द्ध	गोकुल नाथ

3.	दोसौ बावन वैष्णवों की वार्ता	17 वीं सदी का उत्तार्द्ध	गोकुल नाथ
4.	अष्टायाम	1603 ई.	नाभादास
5.	अगहन महात्म्य	1623 ई.	बैकुण्ठमणि शुक्ल
6.	बैताल पचीसी	1710 ई.	सूरति मिश्र
7.	सेवक चरित्र	1779 ई.	प्रियादास
8.	आइने अकबर की भाषा	–	–
9.	वचनिका	1795 ई.	लाला हीरालाल
10.	राजनीति	1802 ई.	लल्लू लाल
11.	माधव विलास	1817 ई.	लल्लू लाल
12.	सोमवंशन की वंशावली	1828 ई.	माणिक लाल ओझा

खड़ी बोली गध की प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार

क्र.स.	**रचना**	**समय**	**रचनाकार**
1.	चंद छंद बरनन की महिमा	अकबर–समकालीन	गंगकवि
2.	भाषा योगवाशिष्ठ	1741	रामप्रसाद निरंजनी
3.	मंड़ोबर	1773–1783	–
4.	पंचांग दर्षन	1800	मथुरा प्रसाद शुक्ल
5.	प्रेमसागर	1800	लल्लू लाल
6.	नासिकेतोपाख्यान	1800	सदल मिश्र
7.	रानी केतकी की कहानी	1798–1803	इंशाअल्ला खाँ

शुक्ल जी के अनुसार खड़ी बोली गध के विकास के आरम्भिक चरण से संबंद्ध चार विद्वान –

- इंशाअल्ला खाँ
- लल्लू लाल
- सदल मिश्र
- मुंशी सदासुखलाल 'नियाज'

उपन्यास

- उपन्यास शब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ–
- उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में निम्नानुसार दो मत प्राप्त होते हैं–

प्रथम मत

- इस मत के अनुसार उपन्यास शब्द उप तथा न्यास के भाग से बना है। यहाँ उप का अर्थ होता है, 'समीप' तथा 'न्यास' का अर्थ होता है 'धरोहर' अर्थात् हमारे पास में रखी हुई वस्तु ही उपन्यास कहलाती है।

द्वितीय मत

- इस मत के अनुसार भी उपन्यास उप तथा न्यास के भाग से बना है, यहाँ उप का अर्थ होता है 'सामने' तथा 'न्यास' का अर्थ होता है 'स्थापना' अर्थात् हमारे सामने ही किसी विषय वस्तु को स्थापित करना ही उपन्यास कहलाता है।

उपन्यास की परिभाषाएँ

- मुंशी प्रेमचंद के अनुसार– ''मानव जीवन पर प्रकाश डालना एवं उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास कहलाता है।''
- मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास को मानव चरित्र का आख्यान भी कहा है।
- बाबू श्यामसुंदर दास के अनुसार– ''उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।''
- डॉ. गणपति चंद्र गुप्त के अनुसार– ''उपन्यास गद्य का एक नवविकसित रूप है, जिसमें कथावस्तु, चरित्र –चित्रण, संवाद इत्यादि तत्त्वों के माध्यम से यथार्थ एवं कल्पना का मिश्रित रूप के द्वारा किसी कहानी को आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है।''
- 'क्रोस' के अनुसार– ''उपन्यास से अभिप्राय उस गद्यमय अल्प कथा से है, जिसमें मानव जीवन के यथार्थ का वास्तविक चित्रण किया जाता है।''

सारांश

- उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'मानवीय मनोवेगों का ऐसा चित्रण, जिसमें कल्पना एवं यथार्थ का सुन्दर वर्णन किया जाता है, उसे ही उपन्यास कहते हैं।'

उपन्यास की प्रमुख विशेषताएँ

- उपन्यास हिन्दी गद्य काव्य की एक नवविकसित विधा है।
- इसमें किसी मानव के जीवन का सर्वांग विवेचन किया जाता है।
- उपन्यास में कल्पना एवं यथार्थ का सुन्दर मिश्रण किया जाता है।
- उपन्यास में मुख्य कथा के साथ–साथ कुछ सहायक प्रासंगिक कथाओं को भी शामिल कर दिया जाता है।

उपन्यास के प्रमुख तत्त्व

- उपन्यास एवं कहानी विधा में प्रमुखतः निम्नलिखित 06 तत्त्व पाए जाते हैं–
  - कथानक या विषय वस्तु
  - पात्र एवं चरित्र चित्रण
  - कथोपकथन या संवाद
  - भाषा शैली
  - देश काल वातावरण
  - उद्देश्य

हिन्दी साहित्य के सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. नगेन्द्र/ डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार परीक्षा गुरु– 1882 ई. लेखक लाला श्रीनिवास दास
- डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त के अनुसार– भाग्यवती– 1877 ई. लेखक– श्रद्धाराम फुल्लौरी

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार– पूर्ण प्रकाश चन्द्र, प्रभा– 1880 ई., लेखक– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- श्रीकृष्णलाल के अनुसार– चन्द्रकान्ता– 1891 ई., लेखक– देवकीनन्दन खत्री
- डॉ. शिवनारायण श्रीवास्तव के अनुसार– रानी केतकी की कहानी– 1803 ई., लेखक– सैयद इंशा अल्ला खाँ
- डॉ. गोपालराय के अनुसार– देवरानी–जेठानी की कहानी– 1870 ई., लेखक– पं. गौरीदत्त
- सर्वमान्यतानुसार– परीक्षागुरु

उपन्यास से संबंधित अन्य विशेष तथ्य

- हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास–
  ह्रदयहारिणी या आदर्शरमिणी– 1890 ई., लेखक– किशोरीलाल
- हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम राजनीतिक उपन्यास–
  प्रेमाश्रम प्रेमाश्रेय– 1922 ई., लेखक– मुंशी प्रेमचन्द
- हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम जीवन चरित्रात्मक उपन्यास–
  झाँसी की रानी– 1946 ई., लेखक– वृंदावन लाल वर्मा
- हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम आख्यायिक शैली का उपन्यास–
  श्यामा स्वप्न– 1885 ई., लेखक– ठाकुर जगमोहन
- हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम पत्रात्मक शैली का उपन्यास–
  चंद हसीनों के सतत्– 1927 ई., लेखक– पाण्डेय बेचन शर्मा
- हिन्दी साहित्य में स्मृति शैली का सर्वप्रथम उपन्यास–
  देहाती दुनिया– 1926 ई., लेखक– शिवपूजन सहाय
- हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम आंचलिक उपन्यास–
  मैला आंचल–1954 ई., लेखक– फणीश्वरनाथ रेणू
- हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों के जन्मदाता– किशोरी लाल गोस्वामी
- हिन्दी साहित्य में तिलस्मी उपन्यासों के जन्मदाता– देवकीनंदन खत्री
- हिन्दी साहित्य में जासूसी उपन्यासों के जन्मदाता– गोपालराय गहमरी
- हिन्दी उपन्यास का घासलेटी साहित्य– पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के द्वारा रचित उपन्यास मानव मन पर तुरन्त अपना प्रभाव छोड़ देते हैं, जिसके कारण बनारसीदास चतुर्वेदी ने उग्र के द्वारा रचित उपन्यासों को घासलेटी साहित्य कहकर पुकारा है।

हिन्दी उपन्यास का काल विभाजन

- हिन्दी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद सर्वप्रथम श्रेष्ठ उपन्यासकार हुए हैं, अतः इनको केन्द्र बिन्दु में मानकर हिन्दी उपन्यास को निम्नानुसार तीन कालखण्डों में विभाजित किया गया है–
  - प्रेमचंद पूर्व युगीन हिन्दी उपन्यास– 1918 ई. से पूर्व रचित उपन्यास
  - प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास– 1918 ई. से 1938 ई.
  - प्रेमचंदोत्तर युगीन हिन्दी उपन्यास– 1938 ई. से अब तक

<u>उपन्यास</u>

- उपन्यास आधुनिक गध की एक प्रमुख विधा हैं।

- जिसका जन्म 18वीं शताब्दी में पश्चिम में हुआ।
- हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यासों पर बांग्ला तथा अंग्रेजी उपन्यासों का प्रभाव था।

प्रेमचंद पूर्व युग

- इस युग में मुख्यतः तीन प्रकार के उपन्यास लिखे गए हैं –
  - सुधारवादी उपन्यास
  - मनोरंजनपरक उपन्यास
  - ऐतिहासिक उपन्यास

प्रेमचंद पूर्व युग के महत्वपूर्ण उपन्यासकार एवं उपन्यास –

क्र.स.	उपन्यासकार	उपन्यास
1.	पं.गौरी दत्त	देवरानी–जेठानी की कहानी (1870)
2.	ईश्वरी प्रसाद / कल्याणराय	वामा शिक्षक (1872)
3.	श्रद्धाराम फिल्लौरी	भाग्यवती (1877)
4.	लाला श्री निवासदास	परीक्षा गुरू (1882)
5.	बालकृष्ण भट्ट	रहस्य कथा (1879)
6.	ठाकुर जगमोहन सिंह	श्यामा स्वप्न (1888)
7.	राधाकृष्ण दास	निस्सहाय हिन्दू (1890)
8.	लज्जाराम मेहता	धूर्त रसिकलाल (1899)
9.	अयोध्या सिंह उपाध्याय	ठेठ हिन्दी का ठाठ (1899)
10.	देवकीनन्दन खत्री	चन्द्रकांता
11.	भुवनेश्वर मिश्र	धराऊ धरना
12.	जैनेन्द्र किशोर	गुलेनार (1907)
13.	मथुरा प्रसाद शर्मा	नूरजहाँ बेगम वह जहाँगीर
14.	मिश्र बंधु	वीरमणि
15.	श्याम सुन्दर वैध	पंजाब पतन

- सौ अजान एक सुजान हिन्दी का पहला उपन्यास हैं, जिसमें चरित्र–चित्रण को कथा या उद्देश्य की तुलना में प्राथमिकता दी गई हैं । इस कथा में ऋषिनाथ तथा निधिनाथ दो अजानों (अज्ञानियों) को गुरू चन्द्रशेखर (सुजार) द्वारा उचित मार्ग पर लाने की कथा वर्णित हैं ।
- 'श्यामा स्वप्न' हिन्दी में आख्यायिका शैली का प्रथम उपन्यास माना गया हैं ।
- किशोरीलाल गोस्वामी को हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यास लेखन परम्परा का जन्मदाता माना जाता हैं।
- किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'हृदयहारिणी' हिन्दी का पहला ऐतिहासिक उपन्यास माना जाता हैं ।
- इनके द्वारा रचित 'स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी' वेश्या जीवन पर आधारित हिन्दी का पहला उपन्यास हैं।
- चन्द्रकांता में नौगढ़ के राजकुमार वीरेन्द्र सिंह एवं विजयगढ़ की राजकुमारी चंद्रकांता की प्रेम–कहानी वर्णित हैं।

प्रेमचंद युग (1918–1936 ई.)

प्रेमचंद (1880–1936 ई.)

- प्रेमचंद के आगमन तक हिन्दी उपन्यास रोमांच, काल्पनिक तथा नैतिक उपदेशों से भरा रहा। प्रेमचंद ने पहली बार उपन्यास परंपरा को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा।
- प्रेमचंद लिखते हैं – ''जो रचनाएँ सिर्फ मनोरंजन के लिए होती हैं, उनका महत्व दो कौड़ी का है।''
- प्रेमचंद का मूल नाम 'धनपतराय' था। वह उर्दू में 'नवाबराय' तथा हिन्दी में प्रेमचंद के नाम से रचनाएँ लिखते थे।
- प्रेमचंद को धनपतराय नाम दयानारायण निगम ने दिया।
- प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट' की संज्ञा बंगाल के प्रसिद्ध कथाकार भरतचन्द्र चटर्जी द्वारा दी गई।
- प्रेमचंद ने अधिकतर उपन्यास पहले उर्दू में लिखे ये, बाद में स्वयं उनका हिन्दी रूपान्तरण किया।
- डॉ. नगेन्द्र के अनुसार 'कायाकल्प' मूल रूप से हिन्दी में लिखित प्रथम उपन्यास हैं।
- प्रेमचंद का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास 'रूठी रानी' हैं, जिसकी रचना वर्ष 1907 ई. हैं।

प्रेमचन्द के उपन्यास (उर्दू)	हिन्दी रूपान्तरण
किशन (1907 ई.)	गबन (1931 ई.)
बाजार– ए – हुस्न (1917 ई.)	सेवासदन (1918 ई.)
गोश – ए– आफियत	प्रेमाश्रय (1922 ई.)
चौगन– ए – हस्ती	रंगभूमि (1925 ई.)

प्रेमचंद युग के अन्य उपन्यासकार व उपन्यास

शिवपूजन सहाय (1893–1963)

रचनाएँ

- देहाती दुनिया (1926) – इसे आँचलिक उपन्यास माना जाता हैं ।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' (1900–1963)

रचनाएँ

- चंद हसीनों के खतूत (1927)
- दिल्ली का दलाल
- चॉकलेट
- बुधुआ की बेटी
- फागुन के चार दिन

विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (1891–1985)

रचनाएँ

- माँ (1929)
- भिखारणी (1929)
- संघर्ष (1945)

ऋषभचरण जैन (1912–1985)

- मास्टर साहब (1927)
- पैसे का सार्थी (1928)
- दिल्ली का व्याभिचार (1928)
- बुर्केवाली (1928)
- वेश्या पुत्र (1929)
- चाँदनी रात (1930)

- सत्याग्रह (1930)
- गदर (1931)
- भाग्य (1931)
- रहस्यमयी (1931)
- मधुकरी (1933)
- मन्दिर द्वीप (1936)
- मयखाना (1938)
- तीन इक्के (1940)

जयशंकर प्रसाद (1889–1937)

- कंकाल (1929)
- तितली (1934)
- इरावती (1936) अपूर्ण

चतुरसेन शास्त्री (1891–1960)
रचनाएँ

- हृदय की परख
- हृदय की प्यास
- व्याभिचार
- अमर अभिलाषा
- आत्मदाह
- वैशाली की नगरवधु
- मन्दिर की नर्तकी
- रक्त की प्यास
- अपराजिता
- आलमगीर
- सोमनाथ
- वयं रक्षाम

सियारामशरण गुप्त (1895–1963)
रचनाएँ

- गोद
- अन्तिम आकांक्षा
- नारी

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (1899–1961)
रचनाएँ

- अप्सरा
- अलका
- निरूपमा
- प्रभावती
- काले कारनामे
- चोटी की पकड़
- कुल्ली भाट
- बिल्लेसुर वकरिहा
- इन्दुलेखा (अपूर्ण)

प्रेमचंदोत्तर युग (1936 से वर्तमान)

- मनोविश्लेषणवादी उपन्यास

जैनेन्द्र कुमार (1905–1988)
रचनाएँ –

- परख
- सुनीता

- त्यागपत्र
- कल्याणी
- सुखदा
- विवर्त
- व्यतीत
- जयवर्धन
- मुक्तिबोध

- जैनेन्द्र को हिन्दी में मनोविश्लेषणवादी उपन्यास का अभिकर्ता माना जाता हैं ।
- 'मुक्तिबोध' जैनेन्द्र का राजनीतिक विमर्श का उपन्यास

इलाचंद्र जोशी (1902–1982)

रचनाएँ –

- घृणामयी
- संन्यासी
- पर्दे की रानी
- प्रेत और छाया
- निर्वासित
- सुबह के भूले
- जिप्सी
- जहाज का पंक्षी
- भूत का भविष्य
- कवि की प्रेयसी

- डॉ. गोपालराय के अनुसार ''इलाचन्द्र जोशी को मनोवैज्ञानिक उपन्यास का पुरस्कर्ता माना जा सकता हैं।''

अज्ञेय (1911–1987)

रचनाएँ –

- शेखर : एक जीवनी
- नदी के द्वीप
- अपने – अपने अजनबी

डॉ. देवराज (1917–1999)

- पथ की खोज
- बाहर भीतर
- रोड़े और पत्थर
- अजय की डायरी
- मै, वे और आप
- दूसरा सूत्र

सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास

विष्णु प्रभाकर (1912–2009)

- ढलती रात
- निशिकांत
- तट के बन्धन
- स्वप्नमयी
- दर्पण का व्यक्ति
- कोई तो
- अर्द्धनारीश्वर
- संकल्प

उदय शंकर भट्ट –(1898–1966)

- नये मोड़
- सागर, लहरे और मोड़
- लोक–परलोक
- शेष–अशेष
- दो अध्याय

उपेन्द्र नाथ 'अश्क' (1910–1996)

- सितारों के खेल
- गिरती दीवारें
- बड़ी–बड़ी आँखे
- गर्म राख
- पत्थर – अल पत्थर
- शहर में घूमता आईना
- एक रात का नाटक
- एक नन्ही कंदील

अमृतलाल नागर (1916–1960)

- महाकाल
- सेठ बॉकेलाल
- बूँद और समुंद्र
- शतरंज की मोहरे
- सुहाग के निपुर
- अमृत और विष
- सात घूँघट वाला मुखड़ा
- मानस का हँस
- नाच्यौ बहुत गोपाल

भीष्म साहनी (1915–2003 ई.)

रचनाएँ

- झरोखा
- कड़िया
- तमस
- बसन्ती
- मैया दास की माड़ी
- कुन्तो
- नीलू – नीलिमा – निलोफर
- जयहिन्द की सेना

अमरकान्त –(1925–2014 ई.)

रचनाएँ

- सूखा पत्ता
- ग्रामसेविका
- आकाश पक्षी
- काले उगे दिन
- बीच की दीवार
- सुखजीवी
- सुनंर पांडे की पतोह
- खुदीराम
- इन्हीं हथियारों से

व्यक्तिवादी उपन्यास

भगवतीचरण वर्मा (1903–81)

रचनाएँ

- पतन
- चित्रलेखा
- तीन वर्ष
- टेढ़े – मेढ़े रास्ते
- आखिरी दाँव
- अपने खिलौने
- भूले–बिसरे चित्र
- वह फिर नहीं आई
- सार्म्थय और सीमा
- थके पाँव
- रेखा
- सीधी – सच्ची बातें
- सबही नचावत राम गोसाई

लक्ष्मीनारायण लाल (1927–1987)

रचनाएँ

- धरती की आँखे
- बया का घोंसला और सांप
- काले फूल का पौधा
- रूपा जीवा
- बड़ी चम्पा छोटी चम्पा
- मन वृन्दावन
- प्रेम अपवित्र नदी
- बड़के भईयॉ
- हरा समन्दर, गोपी चन्दर
- वसन्त की प्रतिक्षा

ऐतिहासिक उपन्यास

वृन्दावन लाल वर्मा (1889–1969 ई.)

रचनाएँ

- लगन
- गढ़ कुंढ़ार
- कुण्ड़ली चक्र
- प्रेम की भेंट
- अमरबेल
- कचनार

हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907–1979 ई.)

रचनाएँ

- बाणभट्ट की आत्म कथा
- पुनर्नवा
- चरूचन्द्र लेख
- अनामदास का पोथा

कन्हैयालाल ओझा

रचनाएँ

- सम्पर्क और समर्पण
- मनुष्य का मूल्य
- मकड़ी का जाल
- सिन्धू सीमान्त
- सर्वनाम
- संभवामि

शिवप्रसाद मिश्र रूद्र 'काशीकेय'

रचनाएँ

- बहती गंगा
- सचितात

राजीव सक्सेना

- पणिपुत्रों सोमा
- रमैती

वीरेन्द्र कुमार जैन

- अनत्तर योगी : तीर्थकर महावीर (4 खण्ड़ों में)
    - रामकुमार 'भ्रमर' (1938–1998)
        - फौलाद का आदमी
        - काँच का घर

- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
  - महाकवि कालिदास की आत्मकथा
- बच्चन सिंह
  - सुतोवा सुतपुत्रोवा
  - पांचाली

प्रगतिवादी उपन्यास

राहुल सांकृत्यायन (1893–1963 ई.)

रचनाएँ

- जीने के लिए
- सिंह सेनापति
- यौद्धेय
- मधुर स्वपन
- विस्मृत यात्री
- दिवोदास

रांगेय राघव (1923–1962 ई.)

रचनाएँ

- देवकी का बेटा
- यशोधरा जीत गई
- भारत का सपूत
- राई और पर्वत
- आवाज
- मुर्दों का टीला
- अँधेरे के जुगनू

यशपाल (1903–1976 ई.)

रचनाएँ

- दादा कॉम्ब्रेड़
- देशद्रोही
- दिव्या
- पार्टी कॉम्ब्रेड़
- बारह घण्टे
- अमिता
- मेरी तेरी उसकी बात

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' (1915–1995 ई.)

रचनाएँ

- चढ़ती धूप
- नयी इमारत
- मरू प्रदीप
- उल्का

अब्दुल बिस्मिल्ला –(1949)

रचनाएँ

- समरशेष हैं
- दन्तकथा
- मुखड़ा क्या देखे
- अपवित्र आख्यान
- जहरवाद

आँचलिक उपन्यास

नागार्जुन (1911–1998)

रचनाएँ

- रतिनाथ की चाची
- नये पौध
- वरूण के बेटे
- जमनिया का बाबा
- इमरतिया
- गरीब दास
- पारो

फणीश्वर नाथ रेणु (1921–1977 ई.)

रचनाएँ

- मेला आँचल
- प्रति परिकथा
- जुलूस
- कितने चौराहे
- कलंक मुक्ति

देवेन्द्र सत्यार्थी (1908–2003 ई.)

रचनाएँ

- रथ के पहिये
- कठपुतली
- ब्रह्मपुत्र
- दूधगाछ

हिमांशु श्रीवास्तव (1934–1996 ई.)

- लोहे के पंख
- जल टूटता हुआ
- रिहर्सल
- अपनी–अपनी कंदील
- भित्ति चित्र की मयूरी

राही मासूम रजा (1925–1992 ई.)

रचनाएँ

- आधा गाँव
- टोपी शुक्ला
- हिम्मत जौनपुरी
- ओस की बूँद

हिमांशु जोशी (1935–2018 ई.)

रचनाएँ

- अरण्य
- महासमर
- छाया मत छूना मत
- कगार की आग
- सु–राज

मायानंद मिश्र (1934–2013 ई.)

रचनाएँ

- माटी के लोग सोने की नैया
- मंत्रपुत्र
- पुरोहित

महिला उपन्यासकार

उषा प्रियंवदा

रचनाएँ

- पचपन खम्भे लाल दीवारें
- रूकोगी नहीं राधिका
- भय कबीर उदास
- शेष यात्रा

महरूनिशा परवेज

रचनाएँ

- आँखें की दहलीज
- उसका घर
- कोरजा
- अकेला पलाश

मन्नु भण्ड़ारी

रचनाएँ

- आपका बंटी
- महाभोज
- स्वामी

ममता कालिया

रचनाएँ

- बेघर
- नरख दर नरख
- प्रेम कहानी
- लड़कीयाँ
- एक पत्नी के नोट्स

मृदुला गग

रचनाएँ

- उसके हिस्से की धूप
- वंशज
- चित्त कोबरा
- मैं और मै

मैत्रेयी पुष्पा

रचनाएँ

- स्मृति दंश
- इदन्मम
- अल्मा कबुतरी
- कही ईसुरी फाग
- त्रियाहठ
- गुनाह बेगुनाह

मधुकांकरिया

रचनाएँ

- खुले गगन के लाल सितारे
- सलाम आखीरी
- पत्ताखेर
- सेज पर संस्कृत

महुआ माजी

रचनाएँ

- मैं बोरी शाइला
- मरंग गोड़ा नीलकण्ठ हुआ

सारा रॉय

रचनाएँ

- चील वाली कोठी

ऋता शुक्ल

रचनाएँ

- अग्निपर्व

दलित उपन्यास

- रामजीलाल सहायक
  - बन्धन मुक्ति
- डॉ. धर्मवीर
  - पहला खत
- प्रेम कपाड़िया
  - माटी की सौगन्ध
- लक्ष्मण गायकवाड़
  - पत्थर कटवा
  - वकील पारधी
- सुशीला ताकभौंरे
  - नीला आकाश
  - शिकंजे का दर्द
  - तुम्हे बदलना ही होगा ।

प्रेमचंद पूर्व युगीन उपन्यास

बालकृष्ण भट्ट

- नूतन ब्रह्मचारी– 1886 ई.
- सौ अजान एक सुजान– 1892 ई.
- रहस्य कथा– 1879 ई.

विशेष तथ्य

- इनका रहस्य कथा उपन्यास केवल डॉ. नगेन्द्र के अनुसार ही माना गया है, शेष उपन्यासाकारों ने इनके दो ही उपन्यास स्वीकार किए हैं।
- इनके शेष दोनों उपन्यास विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से लिखे गए हैं।